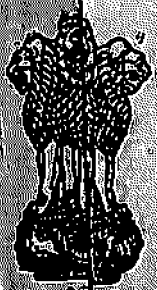

२

संख्या १

सत्यमेव जयते

बिहार विधान सभा वादवृत्त

सरकारी रिपोर्ट

[बुध]वार, तिथि २८ जनवरी, १९५३ ।

ol. II. No. 1

The Bihar Legislative Assembly Debates

Official [R]eport.

[Wed]nesday, the 28th January, 1953.

अधीक्षक, राजकी[य मुद्र]णालय, बिहार,

मूल्य—६ आ[ने]
Price—A[nnas] 6.]

बिहार विधान सभा वादवृत्त

भारत के संविधान के उपबन्ध के अनुसार एकत्र विधान सभा का कार्य विवरण।

सभा का अधिवेशन पटने के सभा सदन में वृहस्पतिवार, तिथि २९ जनवरी, १९५३ को पूर्वाह्न ११ बजे में माननीय अध्यक्ष श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद वर्मा के सभापतित्व में हुआ।

तारांकित प्रश्नोत्तर।

Starred Questions and Answers.

LATE COMING OF THE S. D. O., BHAGALPUR, TO HIS IJLAS.

*3. Shri **RAGHUNANDAN PRASAD KUMAR** : Will the Chief Minister be pleased to state—

(*a*) whether it is a fact that the S. D. O., Sadr Bhagalpur, does not come to his Ijlas in time ;

(*b*) whether it is a fact that he daily comes to his Ijlas after 3 P.M. and sits generally till 7 P.M. and thereby causes much harassment to the lawyers and litigant public ;

(*c*) whether it is a fact that the Bar Library of Bhagalpur has passed a resolution condemning this irregular habit of the S. D. O. ;

(*d*) if the answers to clauses (*a*), (*b*) and (*c*) be in the affirmative do Government propose to issue direction to the S. D. O. to come to his Ijlas in time ?

श्री कृष्ण वल्लभ सहाय—(ए) इसका उत्तर ना है।

(बी) इसका भी उत्तर ना है।

(सी) बात इस प्रकार की है। जब मौजूदा एस० डी० ओ०, भागलपुर ने सबडिवीजन जोआएन किया तो ऐडमिनिस्ट्रेटिव और डिपार्टमेंटल काम सुबह में किया करते थे और कोर्ट का काम दोपहर में करते थे। कभी-कभी इसका नतीजा यह होता था कि शाम तक काम करना पड़ता था। अगस्त, १९५२ में बार लाइब्रेरी ने प्रस्ताव पास किया जिसमें यह बतलाया गया था कि इस प्रथा से मुकदमा के लिये आये हुए लोगों को असुविधा होती है। उस प्रस्ताव में यह प्रार्थना की गयी थी कि कोर्ट आवर्स में मुकदमे का काम किया जाय। इसके बाद से एस० डी० ओ० ठीक समय पर कोर्ट का काम किया करते हैं।

(डी) यह सवाल नहीं उठता है।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर दिल्ली में 'हो' नाच कराने के लिये सिंहभूम जिला के अधिकारियों द्वारा प्रबन्ध।

*५। श्री शुभनाथ देवगम—क्या मुख्य मंत्री, यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) क्या यह बात सही है कि सिंहभूम जिले के जिला अधिकारीगण गणतंत्र (रिपब्लिक) दिवस, १९५३ के अवसर पर, दिल्ली में 'हो' नाच-गान दिखाने के लिये नाचने वालों का एक दल तैयार कर रहे हैं ;

श्री बदरी नाथ वर्मा—(क) साधारणतः ऐसा नहीं होता है जिन स्कूलों की मंजूरी शर्तों के साथ दी जाती है, उनकी अधीनती निर्धारित अवधि के बाद पुनः दी जाती है।

(ख) सरकार या जिला निरीक्षण की ओर से ऐसा कोई फॉर्म छपाकर नहीं भेजा गया है। पर सूचना मिली है कि कुछ दिन पहले वहां एक फॉर्म कुछ शिक्षकों के द्वारा चालू किया गया था, अब कोई फॉर्म जारी नहीं है।

(ग) यह प्रश्न ही नहीं उठता है।

पुस्तकालयों को आर्थिक सहायता।

१४२। श्री रमेश झा—क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) शिक्षा-विभाग की ओर से जो सहायता पुस्तकालयों को विभिन्न जिले में दी जाती है उसके लिये कोई निश्चित नीति बनाई गयी है;

(ख) विभिन्न जिले में गत वर्ष यानि १९५१-१९५२ में कितनी रकम की सहायता भिन्न-भिन्न जिले के पुस्तकालयों को दी गयी है;

(ग) क्या यह सही है कि मनमाने ढंग से बंटवारे का ही यह परिणाम हुआ है कि सहरसा जैसे पिछड़े हुए जिले में सबसे कम रकम की सहायता दी गयी है?

श्री बदरीनाथ वर्मा—(क) जी, हां। प्रत्येक जिले के पुस्तकालयों की संख्या, उनकी स्थिति, परिस्थिति तथा उनके प्रति पढ़े-लिखे लोगों के सहयोग आदि बातों पर विचार कर डिस्ट्रिक्ट एडुकेशन कौंसिल उनके लिये अनुदान की रकम ठीक करती है।

(ख) १९५१-५२ में प्रत्येक जिले के लिये स्वीकृत अनुदान की रकम की तालिका साथ में दी गई है।

(ग) जी नहीं। उपर्युक्त उप-प्रश्न (क) के उत्तर से स्पष्ट है कि सहरसा के अतिरिक्त अन्य जिलों को भी वही अनुदान की रकम दी गई जो सहरसा जिले को। प्रत्येक जिले के अनुदान का बंटवारा सोच-विचार कर किया गया है।

सिंहभूम-कोल्हन स्टेट के अन्तर्गत आठ आदिवासी स्कूल।

१४३। श्री शुभनाथ देवगम—क्या शिक्षा-मंत्री, यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) क्या यह बात सही है कि सिंहभूम-कोल्हन स्टेट के अन्दर अंजेड बेडा, पण्डुवाई, टुटगुटु, चीरु, सायदवा, पुर्णिया से रेगासिया और तुईवीर गांवों में आठ आदिवासी स्कूल हैं;

(ख) क्या यह बात सही है कि ये आठो स्कूल मार्च, १९३९ साल के पहले जिला बोर्ड के अधीन थे;

(ग) क्या यह बात सही है कि जब ये स्कूल जिला बोर्ड के अधीन थे तो इन स्कूलों के शिक्षकों को वेतन और महंगी भत्ता जिला बोर्ड से ठीक समय पर मिलता था;

(घ) क्या यह बात सही है कि मार्च, १९४९ से ये सब स्कूल जिला एडुकेशन कौंसिल के अधीन लिये गये हैं;

(ङ) क्या यह बात सही है कि मार्च, १९४९ से इन आठो स्कूलों के शिक्षकों को महंगी भत्ता नहीं मिले हैं;

(च) यदि खंड (ङ) का उत्तर स्वीकारात्मक है, तो सरकार इन शिक्षकों की तकलीफ को दूर करने का क्या विचार करती है?

श्री बदरीनाथ वर्मा—(क) उत्तर 'हां' है।

(ख) जी हां, यह बात सही है।

(ग) जब ये स्कूल जिला बोर्ड के अधीन थे तो बोर्ड के नियमानुसार उन्हें वेतन तथा मंहगी भत्ता मिलते थे।

(घ) उत्तर 'हां' है।

(ङ) हां, इन्हें इस अवधि का मंहगी भत्ता नहीं मिला है। इसकी जांच के लिये आदेश दिया जा रहा है।

(च) सरकार इन स्कूलों के शिक्षकों को मंहगी भत्ता देने का प्रबन्ध कर रही है।

सहरसा उप-जिला में रात्रि पाठशाला

१४४। श्री कमलेश्वरी प्रसाद यादव—क्या मंत्री, शिक्षा-विभाग, यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) सहरसा उप-जिला में गत पांच वर्षों के अन्दर कितनी रात्रि पाठशालाएं खुली हुई हैं;

(ख) किस थाने में कितनी रात्रि पाठशालाएं इस वर्ष कार्य कर रही हैं;

(ग) इन पाठशालाओं को कितनी सहायता और कौन-कौन सामान दिये गये हैं।

(घ) क्या यह बात सही है कि अनेक रात्रि पाठशालाओं का अस्तित्व ही नहीं है और उन्हें जाली तौर पर सहायता मिल रही है;

(ङ) यदि खंड (घ) का उत्तर स्वीकारात्मक है तो उन पाठशालाओं के नाम तथा इस संबंध में सरकार क्या करना चाहती है?

श्री बदरीनाथ वर्मा—(क) सहरसा उप-जिला में अब तक ५९ रात्रि पाठशालाएं खोली गयी हैं।

(ख) यह सूचना अभी सरकार के पास नहीं है।

(ग) इन पाठशालाओं को ८१० रुपये के स्लेट, पेंसिल, लालटेन इत्यादि दिये गये हैं तथा ८,६८६ रुपया इन पाठशालाओं के शिक्षकों को वेतन के रूप में दिया गया है;

(घ) सरकार को इस संबंध में कोई सूचना नहीं है किन्तु चूंकि सदस्य महोदय ने संदेह प्रकट किया है इसलिये जांच की जायगी।

(ङ) अभी यह प्रश्न ही नहीं उठता है।

मानभूमि जिले में धान और चावल की वसूली।

१४५। श्री शरतदास—क्या मंत्री, पूर्त्ति एवं मूल्य नियंत्रण विभाग, यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) मानभूमि जिले में १९५१-५२ में सरकार ने कितना मन धान और चावल खरीदा है;

(ख) उस जिले से आज तक कितने मन धान और चावल बाहर भेजे गये हैं और कितने मन जिले की घटती इलाकों में जरूरत पर देने के लिये रखे गये हैं;

(ग) क्या यह बात सही है कि चास और झालदा थानों में चावल का पूर्ण अभाव है और मूल्य में वृद्धि हुई है;